35 प्रतिशत आबादी को मयस्सर नहीं पानी

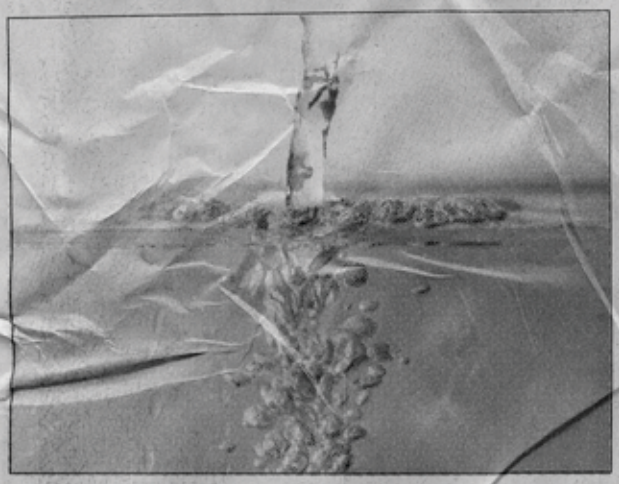

अभी तो वैध कालोनियों को ही पानी देने की मुश्किल आ रही है तो अवैध को देना कैसे संभव है। इन कालोनियों में कुछ स्थान पर बोर कराए है लेकिन भूजल स्तर कम होने पर वह काम नहीं कर रहे है। नर्मदा जल आनें पर ही इन कालोनियों में पानी सप्लाई हो सकेगी।

कृष्णा गौर, महापौर

वीणा सबलोक पाठक

भोपाल, 15 अक्टूबर। किसी ने ठीक ही भविष्यवाणी की है कि अगला विश्व युद्ध पानी के लिए ही लड़ा जाएगा । पानी का संकट जिस प्रकार दिन प्रतिदिन गंभीर होता जा रहा है, उसे देखकर लगता है कि जल्द ही यह बात सही भी साबित हो जाएगी। जल समस्या की बात यदि विश्व , देश, और प्रदेश की ना करके केवल मध्यप्रदेश की राजधानी भोपाल की करें तो स्थिति एकदम स्पष्ट हो जाती है क्योंकि भोपाल की 30 से 35 प्रतिशत आबादी आज भी पानी की एक-एक बूंद के लिए तरस रही है। राजधानी को भले ही महानगर की श्रेणी में लाने के लिए अत्याधुनिक सुख सुविधाएं विकसित की जा रही हो, लेकिन यहां की 30 से 35 प्रतिशत आबादी अब भी कुएं, बावड़ी, बोर जैसे पानी के स्त्रोंतों के बिना है। यह स्थिति एक -दो कालोनियों की नहीं हैं बल्कि शहर की 255 बस्तियां ऐसी हैं, जहां पानी की कोई स्थायी व्यवस्था नहीं है। यह अनुमानित आंकड़ा अथवा मनगढ़ंत बात नहीं वरन् सरकारी स्तर पर कराए गए सर्वे में साबित हुआ है कि भोपाल की 250 से भी अधिक कालोनियों में जबरदस्त जल संकट व्याप्त है। विशेष बात यह है कि अधिकांश बस्तियों के लोग सम्पत्तिकर बकायदा जमा करते हैं इसका मतलब वे नगर निगम सीमा के अन्तर्गत तो आते हैं, अपनी बुनियादी जरूरत पानी से ही महरूम है ।

इनमें से कुछ कालोनियां ऐसी है, जो हाल ही में बनी अथवा बसी है । शहर के बाहरी क्षेत्रों और आसपास के ग्रामीण इलाकों को जोड़कर इन्हें कालोनियों की शक्ल दी गई है। लेकिन ढेर सारी कालोनियां ऐसी है, जो बरसों से नगर निगम सीमा क्षेत्र में आती है । मसलन वार्ड नं. 15 बैरसिया रोड पर बनी पी.एण्ड टी. कालोनी तथा न्यू सिन्धी कालोनी। इन्हें बने 40 से 50 बरस के करीब हो गए है लेकिन आज भी यहां के वांशिदे कुएं , बावड़ी के पानी पर निर्भर है। सिंधी कालोनी, शांतिनगर कालोनी में जनता के सहयोग से टंकी बनाई गई है, जहां आसपास के कुओं का पानी इकट्ठा करके सप्लाई किया जाता है। यही हालात रेल्वे स्टेशन के करीब बसी कालोनी पुष्पा नगर, नवीन नगर, कृष्णा नगर, खुशीपुरा जैसी अन्सल अपार्टमेंट, श्यामला आवासीय कालोनी सहित अनेकों क्षेत्रों की हैं। शांतिनगर कालोनी में नगर निगम घर-घर पानी सप्लाई तो नहीं करती है, लेकिन क्षेत्र की बड़ी टंकी में एक कनेक्शन नगर निगम ने जरूर दे दिया है, जिसके आधार पर उसे पानी प्रदान करने वाले क्षेत्र में जोड़ दिया गया है । यह हालात केवल प्राइवेट अथवा निजी क्षेत्रों के नहीं है बल्कि शहर की सरकारी कालोनियों के वांशिदें भी जल समस्या से जूझ रहे है। सुल्तानिया और इंदिरा गांधी जैसे सार्वजनिक और अनिवार्य सेवा क्षेत्र में भी पानी की वैकल्पिक व्यवस्था की गई है।

यही हालत दूरदर्शन कालोनी, रीजनल कालेज कैम्पस, टी.टी.टी. आई, डिपो चौराहा, ए.जी. कालोनी, इन्कम टैक्स कालोनी, 23 और 25 वीं बटालियन, वायरलेस कालोनी, रेल्वे स्टेशन, रेल्वे क्वाटर, आकाशवाणी, एम.पी.ई.बी. आफिस आदि इलाकों में टंकी में बोर अथवा कुएं का पानी इकट्ठा कर सप्लाई किया जा रहा है। भोपाल नगर निगम सीमा के अन्तर्गत 70 वार्ड आते हैं, जिन्हें 14 जोन में बांटा गया है। इनमें से सबसे बुरे हालात जोन नं. 13 के हैं। यहां की करीब 120 बस्तियां ऐसी है जहां नगर निगम का पानी नहीं पहुंचाया गया है। जे.के. रोड पर बनी और बसी नई कालोनिया, मिनाल रेसीडेन्सी, सिद्धार्थ लेक सिटी, ऋषीपुरम, रीगल होम्स, लवकुश नगर, सुखसागर इसी जोन के अन्तर्गत आती है। इसी प्रकार जोन-14 में ऐसी कालोनियां की संख्या करीब 55 है। केवल 6 जोन ऐसे है जहां नगर, निगम शत-प्रतिशत पानी की सप्लाई करता है। भोपाल की आबादी करीब 25 लाख है, जिनमें से नल कनेक्शन लगाए गए है, ढाई लाख के लगभग। राजधानी के इन परिवारों के लिए पानी की खपत होती है 46 एम.जी. डी.। इसमें 33.5 एम.जी.डी. की पूर्ति होती है कोलार से बाकी 12.5 एम.जी.डी. पानी मुहैया कराया जाता है बड़े तालाब से। इसी प्रकार 5 से 10 प्रतिशत पानी उपलब्ध कराया जाता है अन्य स्त्रोतों से । पिछले कुछ समय से जिस प्रकार शहर का विस्तार हुआ है, जनसंख्या जिस तेजी से बढ़ी है उसको देखते हुए नगर निगम भी मजबूर हो जाता है। वर्तमान स्थिति में तो नगर निगम को उन क्षेत्रों में ही पानी सप्लाई करने में दिक्कत आ रही है, जहां नियमित पानी दिया जाता रहा है। शहर भर में पिछले एक साल से एक दिन छोड़कर पानी की सप्लाई की जा रही है। ऐसे हालात में नए क्षेत्रों में पानी देना लगभग असंभव ही है। नगर निगम का कहना है कि लोगों ने ऐसी कालोनियों में मकान खरीद लिए जहां पानी के पर्याप्त इंतजाम नहीं थे, जबकि निजी कालोनी बनाने वाले बिल्डरों का दावा था कि जल्द ही बस्तियों में नगर निगम का पानी सप्लाई होने लगेगा। लोगों ने भी आनन-फानन में मकान खरीद लिए परन्तु अब इन क्षेत्रों में आए दिन पानी को लेकर झगड़े आम होते जा रहे है। गर्मियों में स्थिति बद से बदतर हो जाती है। पिदले साल ही भोपाल में पानी के झगड़ों ने उग्र रूप धारण कर लिया था, जिसमें कई लोग मारे गए थे। जो कुछ भी इस आपसी खींचतान का खामियाजा आमजन को भुगतना पड़ता है।

शहर में जल स्तर में आ रही गिरावट भी चिन्ता का विषय है। निजी कालोनियों में जिस तरह ट्यूबवेल का उपयोग किया जा रहा है, उससे भी जमीनी जल स्तर लगातार गिर रहा है, शहर का पानी दूषित और प्रदूषित हो रहा है। बैरसिया रोड क्षेत्र में तो सालिड वेस्ट की वजह से पानी सर्वाधिक दूषित है। ऐसी स्थिति में ट्यूबवेल, कुओं, बावड़ियों का पानी नागरिकों के लिए कितना सुरक्षित हो सकता है। इसका अन्दाजा लगाया जा सकता है। इस 30 से 35 प्रतिशत आबादी को अब एक ही आसरा और सहारा दिखता है, नर्मदा मैंया का। नगर निगम का दावा है कि नर्मदा का पानी आने के बाद पूरे शहर को 12 मीटर प्रेशर के साथ 24 घंटे पानी उपलब्ध हो सकेगा। इसी के चलते पिछले एक बरस से राजधानी के बांशिदे नर्मदा मैंया की बाट जोह रहे है। सरकारी दावों और वादों पर यदि यकीन किया जाता तो अब तक तो नर्मदा का पानी घर-घर तक पहुंच चुका होता, लेकिन नगरवासियों ने आस नहीं छोड़ी है।

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक – विजय कुमार दास, के लिए राष्ट्रीय हिन्दी मेल मुद्रण परिसर, नेशनल प्रेस एरिया, सप्रे मार्ग लिंक रोड क्रमांक –3 प्लाट क्रमांक –3 पत्रकार कॉ क्रमांक –3 पत्रकार कॉलोनी के पास, भोपाल से प्रकाशित। दूरभाष : 0755 – 2553471, 2553491, 4276164 फैक्स: 4276717. सभी प्रकार के विवादों का निपटारा न्यायालय

*समाचार चयन के लिये पी.आर.बी.एक्ट के तहत जिम्मेदार।

E-mail: hindimail.2009@rediffmail.com /newstrack@ra